# अध्याय – 6

# समापन

## अध्याय – 6

## समापन

साहित्य और मानव का घनिष्ठ संबंध है। साहित्य समाज का दर्पण तथा पथप्रदर्शक है। साहित्य का सृष्टा मानव है। मानव बुध्दिजीवी प्राणी है। वह हमेशा प्रगति की ओर प्रयत्नशील रहता है। लेकिन मानव की अपनी कुछ सीमाएँ भी होती हैं। मानव समाज में कुछ दोष, अभाव, न्यूनताएँ तथा विसंगतियाँ आदि के दर्शन होते हैं। इन विसंगतियों की ओर संवेदनशील और द्रष्टा लेखक का ध्यान आकृष्ट होता है और उनका चित्रण व्यंग्य के रूप में लेखक करता है। व्यंग्य का यह चित्रण निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि साहित्यिक विधाओं में अभिव्यक्त होता है। व्यंग्य का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानव की विद्रुपताओं को, दुर्बलताओं को दूर करना व्यंग्य का महत्त्वपूर्ण कार्य है। इस दृष्टि से व्यंग्य समाज सुधार का अहिंसात्मक शस्त्र है। समाज पर व्यंग्य के तीक्ष्ण बाण व्यंग्यकार छोड़ता है, समाज जरूर घायल होता है। लेकिन समाजरूपी शरीर से हिंसात्मक खून नहीं निकलता है। यह व्यंग्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। आजकल व्यंग्य को साहित्य की एक नई विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

व्यंग्य अंग्रेजी शब्द सैटायर ( Satire) का हिंदी अनुवाद है। इसमें संदेह नहीं कि व्यंग्य और हास्य का घनिष्ठ संबंध है। यद्यपि व्यंग्य में समाज की विसंगति को दूर करना आवश्यक माना गया है। फिर भी उसमें आवश्यक हास्य को भी स्थान दिया गया है। व्यंग्य व्यंग्यकार की भावाभिव्यक्ति का सबल माध्यम है। साहित्यिक भाषा और व्यंग्य की भाषा में कुछ अंतर है। साहित्यिक भाषा शिष्ट, प्रौढ़, प्रवाही और प्रासंगिक तथा पात्रानुकूल भी होती है, लेकिन व्यंग्य की भाषा में साहित्यिक भाषा की अपेक्षा बोलचाल की भाषा का अधिक योगदान रहता है। जिस व्यक्ति या वस्तु पर व्यंग्य किया जाता है उसको वह चुभती है। उसपर वह कुछ मात्रा में आघात भी करती है। लेकिन साथ ही साथ सुधार भी करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य साहित्य भी बहुत कुछ समृध्द रहा है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्य में राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य के स्पष्ट चित्र दिखायी देते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद के निबंध में, कविता में, नाटक में, यात्रा–वर्णन में उनकी व्यंग्य–धर्मिता दिखाई पड़ती है। साठोत्तर हिंदी व्यंग्यकारों में डॉ.प्रभाकर माचवे, हरिशंकर परसाई, बरसानेलाल चतुर्वेदी, बालेन्दुशेखर तिवारी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, केशवचन्द्र वर्मा, लतीफ घोंघी, डॉ.नरेन्द्र कोहली, शरद जोशी विशेष उल्लेखनीय हैं।

शरद जोशी मुख्यतया व्यंग्यधर्मी साहित्यकार हैं। उनके जीवनकाल में उन्होंने लेखन के लिए ही अपनी कलम चलाई । यद्यपि उन्होंने जीविका के लिए कुछ नौकारियाँ जरूर कीं लेकिन उनका मूल धर्म व्यांग्य–लेखक का ही था। शरद जोशी को लिखना अत्यंत प्रिय था। उन्होंने बाल्यकाल से ही लेखन आरंभ किया था। नई दुनिया, परिक्रमा में उन्होंने स्तंभ लिखना प्रारंभ किया था। "ज्ञानोदय", "रानी", "माधुरी" आदि विभिन्न पत्रिकाओं में कहानियाँ एवं व्यंग्य–लेखन किया। उनकी साहित्य साधना में उनकी पत्नी इरफाना का भी कुछ सहयोग रहा है। उन्होंने एकसाथ धर्मयुग, नवभारत टाइम्स, सारिका, साप्ताहिक हिंदुस्तान, रविवारी आदि पत्र–पत्रिकाओं में काफी व्यंग्य–लेख लिये। फिल्म लेखन और दूरदर्शन धारावाहिक के साथ कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ भी लिखे हैं। उनके प्रतिनिधि व्यंग्य ग्रंथों में "तिलस्म", "जीप पर सवार इल्लियाँ" "रहा किनारे बैठ", "मुद्रिका–रहस्य" इत्यादि । "मुद्रिका–रहस्य" उनके मरणोपरान्त प्रकाशित व्यंग्य निबन्ध संग्रह है।

शरद जोशी की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने सिर्फ दो नाटक लिखे हैं – 1)"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" और 2, "अंधों का हाथी" । ये नाटक लिखने से पहले उन्होंने इंदौर, बंबई, दिल्ली, कलकत्ता आदि नगरों में स्वयं अनेक नाटक, देखे हैं। उन पर चिंतन, मनन किया है और तत्पश्चात् जीवनविषयक, समाजविषयक, अनुभव जन्य ज्ञान पर ध्यान केंद्रित कर अपने नाटकों की रचना की है। अपनी प्रौढ उम्र में ही उन्होंने नाटक लिखे हैं और रंगमंच पर भी ध्यान दिया है।

शरद जोशी के "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" और "अंधों का हाथी" दो नाटकों में दो लोककथाओं का आश्रय लिया गया है। उनके दोनों नाटकों में चित्रित व्यंग्य उनके भोगे हुये यथार्थ का ही प्रतिफलन है। शरद जोशी ने अपने दोनों नाटकों में मुख्यतया राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य को सर्वाधिक स्थान दिया है। उन्होंने अपने दोनों नाटकों में आज की राजनीति पर व्यंग्य के माध्यम से कठोर प्रहार किए हैं। दोनों नाटक भारत में घोषित अपातकालीन स्थिति (1975) के बाद लिखे गए हैं। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में चित्रित नवाब पात्र पर अपातकालीन प्रभाव स्पष्ट ही नजर आता है। नाटककार ने नवाब के माध्यम से तत्कालीन तानाशाही के संकेत दिए हैं और दर्शाया है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत के लोकतंत्र में उसकी जगह नवाबतंत्र या दबावतंत्र ही प्रमुख रहा है। नवाब द्वारा लोगों को दिए जाने वाले बड़े–बड़े आश्वासन चिंतक–3 और अलादाद खाँ नामक आदमी की हत्याओं के बारे में रचे गए षड्यंत्र नवाबशाही के दबाव तंत्र के ही परिचायक है। नाटक में चित्रित कोतवाल कर्तव्यदक्ष सरकारी अधिकारी कम है ओर रिश्वतखोर तथा रामकली पर रिझनेवाला माशुक ज्यादा तीनों चिंतक, चिंतक कम और नवाब की चापलूसी करने में अधिक प्रवीण हैं। नाटक में दरबारी और नागरिकों की जो सृष्टि की गयी हैं वह ज्यादातर आज के स्वार्थी लोगों का जीता–जागता चित्र है। "अंधों का हाथी" नाटक में भी जिन पाँच अंधों को चित्रित किया गया है। उसमें भी आज की राजनीति को ही दिखाया गया है। नाटककार ने पाँच अंधों के माध्यम से आज के अंधे नेता, अंधी राजनीति पर प्रकाश डाला है। दोनों नाटकों में अंधी राजनीति का ही मार्मिक चित्र किया गया है और भारत की साठोत्तर राजनीति की पोल खोल दी है।

शरद जोशी ने अपने दोनों नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य के साथ ही साथ सामाजिक व्यंग्य को भी अभिव्यक्त किया है। भारतीय समाज में समाज के जो अनेक स्तर दिखाई देते हैं उनको नाटककार ने चित्रित किया है और उनके दोषों पर, विसंगतियों पर व्यंग्य बाण छोड़े हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत की प्रजा का किया गया व्यंग्यपूर्ण चित्रण दोनों नाटकों को व्यंग्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान दिलाता है। नाटकों में सुखी प्रजा, परेशान जनता, उपेक्षित अनपढ़, भिखारियों की समस्या, समाज की स्वार्थांधता, रोटी का सवाल, गरीबी हटाओ, धुम्रपान और

परिवार नियोजन की समस्या, सर्मपण की नई व्याख्या, आधुनिक शवयात्रा आदि पर करार व्यंग्य किया गया है।

शरद जोशी के दोनों व्यंग्य नाटक शिल्प तत्व और मंचीय तत्व का सुंदर संगम हैं। नाटककार ने अपने नाटकों को जो शीर्षक दिए हैं वे लाजवाब हैं। दोनों नाटकों के शीर्षक पशु-प्रतीक हैं। इन शीर्षकों के माध्यम से नाटककार ने यह भी संकेत किया है कि मानव से पशु बेहतर है। इतनाही नहीं नाटककार ने अंधों का हाथी शीर्षक में आज के अंधे नेता और अंधी जनता पर प्रहार किया है। शरद जोशी के दोनों नाटकों में उन नाटकों का शिल्प और मंचीय पक्ष व्यंग्य-निर्मिति में सहायक बन गया है। नाटक में संवादों का विशेष महत्त्व है। बिना संवादों के नाट्यरचना ही असंभव है। शरद जोशी ने अपने नाटकों में संवादों में संवाद, उलजलूल संवाद, पात्र-समूह संवाद, शब्दयुग्म संवाद आदि के माध्यम से प्रभावी व्यंग्य निर्मिति की है। दरबारी भाषा, सरकारी पत्र ओर तार की भाषा आदि के माध्यम से नाटककार ने जीवन मानव जीवन की विसंगतियों को उजागर किया है और व्यंग्य की भाषा साहित्यिक भाषा से कितनी भिन्न होती है इसका परिचय दिया है। आत्मकथन शैली, इतिवृत्तात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, सूक्ति शैली, संबोधन शैली और श्रध्दांजली का प्रयोग व्यंग्य की प्रभावान्विति के समर्थ तत्व हैं। नाटकों में कोरस और अन्य गीतों का प्रयोग भी व्यंग्य निर्मिति ओर हास्य निर्मिति में सहायक हुआ है।

रंगमंच की दृष्टि से "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" और "अंधों का हाथी" सफल व्यंग्य नाटक हैं। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब का बाजार में आगमन, कोतवाल और रामकली का रोमान्स, चिंतकों का अनोखा चिंतन, चिंतक-तीन की हत्या, अलादाद खाँ आदमी की हत्या का षड्यंत्र और शवयात्रा तथा "अंधों का हाथी" नाटक में सूत्रधार का प्राक्कथन, हिंदी रंगमंच की हालत, हाथी के प्रति अंधों की उत्सुकता, हाथी की समस्या, हाथी हटाओ आंदोलन, सूत्रधार की मौत और पुनः उपस्थिति ऐसे अभिनय स्थल हैं जो देखकर या पढ़कर दर्शक और श्रोता भावविभोर हो जाते हैं और हास्य कल्लोल में दंग हो जाते हैं।

दोनों नाटकों पर नाटककार और समीक्षकों की जो प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं वे दोनों नाटकों में व्यंग्य का महत्व सिध्द करती हैं।

साठोत्तर हिंदी व्यंग्य नाटकों में की अच्छी परंपरा में लक्ष्मीनारायण लाल के "सगुन पंछी", "सब रंग मोह भंग", ज्ञानदेव अग्निहोत्री का "शुतुर मुर्ग", सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का "बकरी", ब्रजमोहन शाह का "त्रिशंकु", सुरेशचन्द्र शुक्ल "चन्द्र" का "कुत्ते", मणिमधुकर के "रस गंधर्व", "बोलो बोधिवृक्ष", मुद्राराक्षस के "मरजीवा", "तिलचट्टा", हमीदुल्ला के "उत्तर उर्वशी", "दरिंदे", काका हाथरीस के "काका हाथरसी के प्रहसन", शंकर पुणतांबेकर का "बचाओ, मुझ डॉक्टरों से बचाओ", कुसुम कुमार के "रावण लीला", "ओम क्रांति क्रांति" तथा रामेश्वर प्रेम का "शस्त्र संतान" आदि नाटकों का उल्लेखनीय स्थान हैं। इसी परंपरा में शरद जोशी के "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" और "अंधों का हाथी" दो ऐसे व्यंग्य नाटक हैं जो कथ्य, शिल्प, शैली और मंच की दृष्टि से बहुचर्चित, बहुसम्मानित सफल नाटक हैं। संख्या की दृष्टि से केवल दो व्यंग्य नाटक लिखकर शरद जोशी व्यंग्य नाटककारों में अमर बने हैं।